उत्तर-

समुदायवाद : अर्थ एवं उद्देश्य

(Communitarianism : Meaning and Objectives)

आधुनिक समय में समुदायवाद **जॉन रॉल्स** की पुस्तक 'न्याय का सिद्धान्त' (A Theory of Justice, 1971) की प्रतिक्रियास्वरूप अस्तित्व में आया। आलोचकों के अनुसार सरकार का प्रमुख कार्य स्वतन्त्रताओं एवं आर्थिक संसाधनों का न्यायोचित वितरण होना चाहिए। उदारवाद के इन आलोचकों ने स्वयं को कभी भी 'समुदायवादी आन्दोलन' (Communitarian Movement) से सम्बद्ध नहीं माना। अन्य लोगों के द्वारा उन्हें 'समुदायवादी' होने की उपाधि से विभूषित किया गया। यह उदारवाद का एक व्यवस्थित विकल्प था।

'समुदायवाद' के सम्बन्ध में तीन दावे प्रस्तुत किये गये-

(1) सामाजिक सन्दर्भ में नैतिक व राजनीतिक दृष्टिकोण से प्रेरित अनुसंधानिक पद्धति से सम्बन्धित दावा।

(2) स्वयं की सामाजिक प्रकृति से सम्बन्धित बौद्धिक दावा एवं

(3) समुदाय के मूल्य को लेकर सैद्धान्तिक दावा।

समुदायवाद की प्रकृति को सही रूप में समझने के लिए निम्नलिखित पहलुओं या सिद्धान्ता का अध्ययन करना आवश्यक है-

(1) सार्वभौमिकतावाद बनाम विशिष्टवाद (Universalism Versus Particularism)-समुदायवादी 'उदारवादी सिद्धान्त' के सार्वभौमिकता के अभिमान को दूर करना चाहते थे। इसका मुख्य निशाना **रॉल्स** का 'मौलिक स्थिति' (Original Position) का सिद्धान्त था। **रॉल्स** के अनुसार उसका न्याय का सिद्धान्त सार्वभौमिक आधार पर सत्य था। इसके विपरीत समुदायवादियों की मान्यतानुसार न्याय के मापदण्ड विभिन्न समाजों में भिन्न-भिन्न होते हैं। **चार्ल्स टेलर** ने तर्क दिया कि 'नैतिक व राजनैतिक निर्णय तर्क की भाषा तथा व्याख्यात्मक संरचना पर निर्भर करता है।' सार्वभौमिकता के लिए यह आवश्यक है कि मानवीय सद्गुणों तथा मूल्यों का एक सैट (Set) तैयार किया जाये। संक्षेप में कहा जा सकता है कि उदारवादी जिन्होंने विशिष्ट सामाजिक सन्दर्भ से न्यायोचित को प्राप्त करने का प्रयास किया वे दार्शनिक असंगतता एवं राजनीतिक असम्बद्धता के शिकार थे। रॉल्स के अनुसार समुदायवाद के अन्तर्गत एक निष्पक्ष नागरिक 'उदारवादी-लोकतान्त्रिक राजनीतिक

Scanned with CamScanner

संस्कृति का एक अच्छा उदाहरण है तथा उसका राजनीतिक उद्देश्य केवल राजनीतिक समुदायों के नियमों के अनुकूल कार्य करना होता है।

रॉल्स सभी समयों व स्थानों पर उदारवाद की सम्भावना अर्थात् सार्वभौमिकता से इंकार करता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उदारवादी समाजों को सहनशील होना चाहिए। इस प्रकार के समाज का लोकतान्त्रिक होना आवश्यक नहीं है किन्तु यह आवश्यक है कि ऐसा समाज अन्य समुदायों के प्रति आक्रामक नहीं होना चाहिए। साथ ही आन्तरिक रूप से न्याय के सामान्य हित के विचार से प्रेरित होना चाहिए।

सन् 1980 के दशक में 'समुदायावादियों' को गैर उदारवादी समाजों की स्थापना के क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। सन् 1990 के पश्चात् अनुसंधान के क्षेत्र में 'सार्वभौमिकतावाद बनाम विशिष्टवाद' (Universalism Versus Particularism) को लेकर विवाद कुछ कम हो गया। अब विवाद का केन्द्र सार्वभौमिक मानव अधिकारों के सिद्धान्त एवं व्यवहार को लेकर था। इसी दौरान पश्चिमी विश्व के बाहर के देशों में उदारवाद की असफलता के कारणों का भी विश्लेषण किया गया। यह स्वीकार किया जाने लगा कि क्रूरतापूर्ण किये गये युद्ध, निर्धनता, पर्यावरणीय प्रदूषण एवं व्यापक भ्रष्टाचार आदि कतिपय ऐसे प्रमुख कारक हैं जिन्होंने सफलतापूर्वक उदारवादी-लोकतान्त्रिक राज्य की स्थापना में बाधायें उत्पन्न की हैं। पूर्वी एशिया के क्षेत्र से भी उदारवादी लोकतन्त्र को चुनौतियाँ मिलती रही हैं।

(2) स्व से सम्बन्धित विवाद (The Debate Over the Self)-उदारवादियों एवं समुदायवादियों के मध्य एक अन्य विवाद का विषय 'स्व' सम्बन्धित है। 1980 के दशक में **माइकेल सैंडेल** (Michael Sandel) एवं **चार्ल्स टेलर** (Charles Taylor) ने तर्क दिया कि रॉल्स का उदारवाद पूर्णतया 'स्व' या 'आत्म' की व्यक्तिवादी धारणा पर आश्रित है। इसके विपरीत रॉल्स का तर्क था कि अपनी जीवन योजनाओं को आकार देने, आगे बढ़ाने एवं सुधारने में सर्वोच्च रुचि रखते हैं। रॉल्स इस तथ्य की उपेक्षा करता है कि हमारा 'आत्म' हमारे परिवार या धार्मिक परम्परा आदि से गहन रूप से सम्बद्ध होता है। इस आधार पर राजनीति का सम्बन्ध केवल व्यक्तियों को सुरक्षा व स्वयत्तता प्रदान करना नहीं है वरन् उस सामाजिक सम्बद्धता में भी प्रगति लाना है जिसके अन्तर्गत रहकर ही हमारा विकास सम्भव हुआ है।

चार्ल्स टेलर ने उदारवादियों के इस कथन पर आपत्ति व्यक्त की कि "मनुष्य समाज के बाहर पूर्णतया आत्म-निर्भर है।" इसके विपरीत टेलर द्वारा अरस्तू के इस कथन का समर्थन किया गया है कि "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।" उदारवादी विचारकों के मतानुसार 'आत्म' का सृजन सामाजिक परिवेश के बाहर स्वतन्त्र वातावरण में होता है। समुदायवादी किसी भी प्रकार उदारवादियों के इस विचार से सहमत नहीं हैं कि मनुष्य समाज के बाहर रहकर अपने व्यक्तिगत सद्गुणों तथा नैतिक दृष्टिकोण का विकास कर सकता है।

माइकेल सैंडेल (Michael Sandel) के अनुसार सामान्यतया हम स्वयं को एक परिवार, समुदाय एवं राष्ट्र के सदस्य के रूप में, इतिहास निर्माता के रूप में, क्रान्ति की सन्तान के रूप में तथा गणतन्त्र के नागरिक के रूप में सोचते हैं।

(3) समुदाय की राजनीति (The Politics of Community)-समुदायवादी आलोचक उदारवादियों के नकारात्मक सामाजिक व मनोवैज्ञानिक प्रभावों से प्रेरित थे। विशेषतः समुदायवादी इस तथ्य से चिन्तित प्रतीत होते हैं कि परम्परागत उदारवादी संस्थायें

Scanned with CamScanner

वर्तमान समस्याओं तथा एकाकीपन, राजनीतिक उपेक्षा, शहरी अपराध एवं निरन्तर बढ़ते तलाकों को रोकने में असमर्थ रहती हैं। सन् 1990 के दशक में अमेरिका में समुदायवादियों की लहर ने अधिक व्यवहारिक राजनैतिक मापदण्डों को अपनाने तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को प्रेरित करने का प्रयास किया है।

इन राजनीतिक समुदायवादियों ने वर्तमान समस्याओं के लिए वामपंथियों व दक्षिण-पंथियों दोनों को दोषी ठहराया। इन वर्तमान समस्याओं में प्रमुख हैं–धीमी आर्थिक प्रगति, बढ़ती जनसंख्या, शक्ति का नौकरशाहों के हाथों में केन्द्रीयकरण, लाभों का असमान वितरण, शक्तिहीनता, राजनीतिक प्रक्रिया के प्रति उदासीनता। साथ ही तीव्रतापूर्ण विभक्त होते समाज के लिए साम्प्रदायिक जीवन के उन्मूलन को आवश्यक माना गया। इस प्रकार के विचारों को **अमिताई एटजिओनी** (Amitai Etzioni) एवं **विलियम गैल्सटन** (William Galston) जैसे प्रमुख समुदायवादियों द्वारा व्यक्त किया गया। तत्पश्चात बहुत से दार्शनिक, समाजशास्त्रियों तथा लोक-नीति निर्धारकों द्वारा भी इन विचारों का समर्थन किया गया। उल्लेखनीय है कि एटजिओनी (Etzioni) 'सामुदायिक-नीति अध्ययन' से सम्बन्धित संस्था के डायरेक्टर हैं। यह संस्था वाशिंगटन में सरकारी अधिकारियों को आवश्यक परामर्श प्रदान करती है।

समुदायवादियों की धारणा के अनुसार वर्तमान लोककल्याणकारी राज्य अधिकारों के सार्वभौमिक तर्क के बावजूद एक नागरिक समाज में पारिवारिक व सामाजिक बन्धनों को कमजोर करने वाले सिद्ध हुए हैं। इन राज्यों ने अप्रत्यक्ष रूप से अनियन्त्रित मुक्त बाजार व पूँजीवाद को भी प्रोत्साहित किया है। अमेरिका के राजनीतिज्ञ अपने अस्तित्व के लिए अधिकाँश रूप से आर्थिक हित समूहों पर निर्भर करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे व्यापक रूप से एक बहुमत का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं वरन् उनका सम्बन्ध वर्ग विशेष के हितों की संवृद्धि मात्र होता है। वैश्वीकरण के कारण भी इस प्रवृत्ति में वृद्धि आई है। सामाजिक उत्तरदायित्वों की उपेक्षा के परिणामस्वरूप मानव अधिकारों की बात भी महत्वहीन हो जाती है। अधिकारों तथा उत्तरदायित्वों के इस असन्तुलन को दूर करने के लिए समुदायवादियों ने सुझाव प्रस्तुत किया कि नवीन अधिकारों का सृजन किया जाये तथा व्यक्तिगत हितों की पूर्ति के साथ-साथ परिवार, शिक्षण संस्थाओं, राष्ट्रीय राजनीतिक जीवन आदि विषयों पर भी ध्यान केन्द्रित किया जाये। कतिपय मौलिक नागरिक व राजनीतिक स्वतन्त्रताओं को यथावत् कायम रखा जाये।

प्रमुख समुदायवादी **एटजिओनी** (Etizioni) की नीतियाँ इस प्रकार की थीं कि वह सामाजिक व्यवस्था तथा स्वतन्त्रता के मध्य एक सन्तुलन स्थापित करना चाहता था। वह समुदाय के महत्व को ही प्राथमिकता देने का पक्षधर नहीं था। इससे पूर्व उदारवादी जॉन स्टुअर्ट मिल एवं रूढ़िवादी बर्क ने भी 'सामाजिक व्यवस्था' की आवश्यकता को स्वीकार किया था। राजनीतिक समुदायवादियों द्वारा जिस सन्दर्भ में इस शब्दावली का प्रयोग किया गया, उसका अर्थ स्पष्ट करते हुए **एलिजाबेथ फ्रेजर** (Elizabeth Frazar) ने लिखा है कि सामाजिक व्यवस्था से तात्पर्य है कि पदसोपानीय-व्यवस्था (Hierarchical Arrangements) को न्यायोचित ठहराया जाये तथा आधुनिक समाजों से संघर्षों को दूर रखने का प्रयास किया जाये।

समुदायवादियों के अनुसार हमारे जीवन का उद्देश्य समुदाय की भलाई होना चाहिए जिसके कारण हमारा अस्तित्व एवं पहचान कायम है। समुदाय का अस्तित्व मूल्यों पर

आधारित होता है अतः समुदायवादियो की राजनीतिक योजनायें व नीतियाँ इस प्रकार की होनी चाहिए कि बिना स्वतन्त्रता का बलिदान किये इन मूल्यों को कायम रखा जा सके।

प्रश्न 2. समुदायवादियों के अनुसार समुदाय के मुख्य प्रकार बताइये।

Describe the main types of community according to communitarianists.

उत्तर–समुदायवादियों ने प्रमुख रूप से निम्नलिखित समुदायों का उल्लेख किया है–

(1) भौगोलिक स्थिति पर आधारित समुदाय–यह समुदाय का एक सामान्य स्वरूप है। एक निश्चित क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों का समूह 'भौगोलिक समुदाय' कहलाता है। उदाहरणार्थ एक छोटा गाँव या एक बड़ा शहर। यह किसी भी व्यक्ति के जन्म-स्थान, पालन-पोषण के स्थान एवं व्यस्क होने के स्थान को व्यक्त करता है। वह अपने परिचित वातावरण के आधार पर पहचाना जाता है। राजनीतिक दृष्टि से विकास के समय नीतियाँ निर्धारित करते समय समुदाय की भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखा जाता है। भवन निर्माण आदि के समय स्थान-विशेष की वास्तुकला को ध्यान में रखकर ही नीति निर्धारण करना चाहिए।

(2) ऐतिहासिक समुदाय–इसके अन्तर्गत वे 'काल्पनिक-समुदाय' आते हैं जिनका कई पीढ़ियों पहले अपना एक समान इतिहास रहा। अतीत से जोड़ने के अतिरिक्त ये समुदाय हमें भविष्य की ओर भी उन्मुख करते है जिससे कि हम समुदायों के अतीत के आदर्शों एवं प्रेरणाओं को सामान्य भलाई के लिए ग्रहण कर सकें। वे आदर्श मानव-जीवन को अर्थ एवं आशा प्रदान करते हैं। कतिपय विद्वानों द्वारा राष्ट्र एवं भाषा पर आधारित समान संस्कृतियों के समुदायों की भी बात की जाती है। पाश्चात्य उदारवादी लोकतन्त्र विभिन्न राष्ट्रों को इसी आधार पर जोड़ने का प्रयास करते हैं। यही कारण है कि वर्तमान में 'बहुराष्ट्रीय प्रकृति' के सिद्धान्त को मान्यता दी जा रही है।

(3) मनोवैज्ञानिक समुदाय–ये समदाय विश्वास एवं सहयोग की भावना पर आधारित होते हैं। इन समुदायों के सदस्य एक होने की मनोवैज्ञानिक भावना से युक्त होते हैं तथा इनके लक्ष्य भी एक समान होते हैं। उनकी कार्यविधियाँ व अनुभव भी समान होते हैं। समुदाय के सदस्य समुदाय की भलाई का विचार मस्तिष्क में रखते हुए समुदायिक हित की भावना से कार्य करते हैं। इस समुदाय के सदस्यों का एक ही स्थान-विशेष पर रहना आवश्यक नहीं है। 'परिवार' एवं 'लघु स्तरीय कार्य क्षेत्र' इसके प्रमुख उदाहरण हैं। समुदायवादियों द्वारा ऐसी नीतियों का पक्ष लिया जाता है जो कि परिवार तथा परिवार जैसे ही अन्य समूहों के बन्धनों को दृढ़ करने का प्रयास करती है। समुदायवादी उस राजनीतिक विधि का भी समर्थन करते हैं जिससे इस प्रकार की शिक्षा को प्रोत्साहित किया जा सके जिससे कि युवावस्था में ही सदस्य इन मनोवैज्ञानिक समुदायों में भाग ले सके। जापान में प्राथमिक विद्यालयों में ही सामूहिक सहयोग की शिक्षा दी जाती है।

समुदायवादियों की राजनीतिक परियोजना का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह उपयुक्त वर्णित तीनों प्रकार के समुदायों के मूल्यों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सम्भावना व्यक्त की जाती है कि तीनों समुदायों के हितों को आगे बढ़ाने में व्यवहार में इनके पारस्परिक संघर्ष की सम्भावना हो सकती है। पारिवारिक जीवन में अत्यधिक संलग्नता के परिणामस्वरूप सार्वजनिक जीवन के प्रति कर्त्तव्यों के साथ संघर्ष उत्पन्न हो सकता है। कुछ ही व्यक्तियों के पास इतनी क्षमता व इतना समय होता है कि वे दोनों स्थानों पर भागेदारी निभा सके। जापान में सशक्त सामुदायिक पहचान कार्यक्षेत्र में अत्यधिक संलग्नता पर आधारित है। कई बार कार्य-अधिकता से मृत्यु हो जाती है। परिवार

SHOT ON REDMI

Scanned with CamScanner

के लिए उनके पास समय ही नहीं होता है। इसी प्रकार उदारवादियों को कई बार 'स्वतन्त्रता' व 'समानता' के आदर्शों में से किसी एक का चयन करने के लिए विवश होना पड़ता है।

सामुदायिक भावना को दृढ़ करने के लिए बहुत से सुझाव प्रस्तुत किये जाते हैं जैसे कि सामुदायिक जीवन के एक विशेष स्वरूप को ही प्रोत्साहित करना, पारिवारिक समुदायों की अपेक्षा राष्ट्रीय अथवा राजनीतिक समुदायों को महत्व आदि। यद्यपि ये सुझाव भी निराधार नहीं हैं तथापि इस धारणा को स्वीकार कर लेना गलत होगा कि सामुदायिक उद्देश्यों का सदैव व्यक्तिगत हितों से संघर्ष होता है। वस्तुतः ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। राजनीति को उत्तम जीवन का अनिवार्य अंग मानते हुए समुदायवादी लोकतान्त्रिक अधिकारों के महत्व पर बल देते हैं। ❐

Scanned with CamScanner